पाठ - 2 दोहे

(कबीर, रहीम, वृंद)

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होई।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोई।।

संदर्भ–प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** कवि 'कबीरदास' द्वारा रचित है।

प्रसंग–प्रस्तुत दोहे में ऊँचे कुल म जन्म लेने की अपेक्षा उच्च **कर्मों** को करने के लिए प्रेरित किया गया है।

व्याख्या– कबीरदास जी कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेने से ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसके कार्य महान न **हों**। वे उदाहरण देते हुए कहते हैं कि यदि सोने के घड़े में शराब भरी है तो भी सज्जन व्यक्ति उसकी हमेशा निन्दा करेंगे अर्थात् सोने के पात्र में शराब होने पर सब उससे घृणा करते हैं। इसी तरह उच्च कुल में जन्म लेने से व्यक्ति ऊँचा नहीं होता बल्कि वह अपने **कर्मों** से ऊँचा होता है।

विशेष– **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

प्रस्तुत दोहे में मनुष्य को सोने जैसा तन पाकर हमेशा अच्छे कर्म करते रहने की प्रेरणा दी गई है।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय।।

संदर्भ–प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग–कबीरदास ने निन्दक को अपने पास रखने की सलाह दी है।

व्याख्या–कबीरदास जी कहते हैं कि निंदक से बचने की नहीं बल्कि उनको अपने पास रखने की **आवश्यकता** है। निंदक को तो **आँगन** में कुटी बनवाकर अपने पास ही रखना चाहिए, क्योंकि निंदक से हमें अपनी कमियों का पता चलता है और हम उन्हे दूर कर लेते हैं। इस प्रकार साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।

विशेष–1. **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

2. प्रस्तुत दोहे में निन्दक को अपने पास रखने से लाभ प्राप्त होने की बात कही गई है।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग–प्रस्तुत दोहे में गुरू की महिमा का वर्णन किया है।

व्याख्या–कबीरदास जी कहते हैं कि गुरू कुम्हार ह और उसकी रचना **यानि** उसका **शिष्य** घड़ा है। **शिष्य** को तैयार **करने के लिए गुरु** उसकी खामियों, उसके दोषों को दूर करता जाता है। ऐसा करते हुए वह अपने **शिष्य** को भीतर–भीतर सहारा देता है, पर बाहर से **डाँटता**-मारता है। कहने का अर्थ है कि **गुरु** का व्यवहार ऊपर से तो कठोर लगता है पर आंतरिक रूप से बड़ा स्नेहपूर्ण होता है।

विशेष–1.**इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

2.प्रस्तुत दोहे में **शिष्य** के लिए **गुरु** का महत्व बतलाया है।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सियानो काम।।

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** कबीरदास द्वारा रचित है।

प्रसंग– धन अधिक होने पर उसे **अच्छे कार्य में** खर्च करने की बात कही गई है क्योंकि **धन की अधिकता से कई प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं**।

व्याख्या– इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो समझदारी इसी में **है** कि दोनों हाथों से **दान देना** शुरू कर दीजिए। नाव में पानी बढ़ने पर उसका डूबना **निश्चित** है, इसलिए जैसे ही पानी भरने लगता है, नाविक उसे दोनों **हथेलियाँ** मिलाकर बाहर फेंकने लगता है। इसी तरह यदि घर के अंदर **आवश्यकता** से अधिक पैसा बढ़ने लगे तो

समझदार व्यक्ति को दोनों **हथेलियाँ** भर–भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात दान देना चाहिए क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी **विकृतियाँ** लकर आती है, जिससे घर का **विनाश** होना **निश्चित** होता है।

विशेष– **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

धन की अधिकता से व्यक्ति का आचरण बिगड़ने की संभावना बनी रहती है।

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।।

संदर्भ – प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** रहीम द्वारा रचित है।

प्रसंग – **यहाँ** बताया गया है कि जब अज्ञानी खुद को महत्व देने लगे तो बुद्धिमान कुछ समय के लिए मौन धारण कर लेते हैं।

व्याख्या– रहीम कहते हैं कि पावस अर्थात् वर्षा ऋतु के आने पर कोयल अपने मन में यह विचार करके मौन साध लेती है कि अब तो मेंढक वक्ता हो गए हैं, अब हमें कौन पूछेगा अर्थात अब हमारी कद्र कौन करेगा?

तात्पर्य यह है कि जब कम जानकार अज्ञानी लोग बढ़–चढ़कर बात करते हुए महत्व पाने लगते हैं,तो ज्ञानी कुछ समय के लिए मौन धारण कर लेते हैं।

विशेष– 1. इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

2. समय अनुकूल हो तभी व्यक्ति को कार्य करना चाहिए।

खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दावै ना दबै, जानत सकल जहान।।

संदर्भ–प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** रहीम द्वारा रचित है।

प्रसंग–रहीम जी कहते **हैं** कि खैर, खून, खाँसी, **खुशी**, वैर, प्रीति और मदपान ये सातों ऐसे हैं, जिनको छिपाया नहीं जा सकता।

व्याख्या–रहीम कहते है कि ये सातों दबाने से नहीं दबते यानी उभर ही आते हैं। कहने का अर्थ **है** कि सारी दुनिया जानती है कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी बातें समय आने पर प्रकट हो जाती हैं।

खैर यानी कत्था पान में प्रयोग किया जाता है और होठों को लाल करके अपनी उपस्थिति प्रकट कर देता है। ऐसे ही खून भी अपने रंग का छोड़ देता है उसी प्रकार **खाँसी** का भी दबाया **नहीं** जा सकता। ऐसा ही वैर होता है जब व्यक्ति एक दूसरे के सामने आते हैं तो उनका हावभाव और व्यवहार भी बदल जाता है। इसी तरह शराबी **की उसकी** चाल–ढाल से पता लग जाता है।

विशेष–**1. इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

2. रहीम कहते **हैं** कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता।

करत–करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत–जात तें, सिल पर परत निसान।।

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा वृंद द्वारा रचित है।

प्रसंग– यहाँ निरन्तर अभ्यास करने पर बल दिया गया है।

व्याख्या–कवि कहते हैं कि निरंतर अभ्यास करने **से मूर्ख** व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है, ठीक उसी तरह जैसे पनघट पर लगातार पानी **खींचने** से पत्थर पर रस्सी के **निशान** बन जाते हैं। **इसी प्रकार** किसी भी काम में सफलता पाने के लिए निरन्तर अभ्यास करना जरूरी है।

विशेष– **1. इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

2. व्यक्ति को लगातार अभ्यास करना चाहिए जिससे वह निपुण हो सके।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत–अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली–बुरी कहि देत।।

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा **हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक से लिया गया है | यह** वृंद द्वारा रचित है।

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में नैनों को व्यक्ति के मन के भावों का दर्पण कहा गया है।

व्याख्या–आदमी के नयन यानी उसकी **आँखें** उसके **हृदय** में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर देती हैं। ठीक उसी तरह जैसे स्वच्छ आरसी भले या बुरे रूप–रंग को व्यक्त कर देती है। अथ यह है कि आदमी की **आँखों** से उसके मन के भावों का पता चल जाता है। प्रेम करने वालों की **आँखों** में चमक होती है। क्रोध हो तो **आँखें** लाल हो जाती हैं अगर **शोक** हो तो **आँसू** उमड़ आते हैं।

विशेष– **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |**

आँखों को मनोभावों का दर्पण कहा **गया है |**